अजायब बानी

मासिक पत्रिका दिसम्बर–2020

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899, Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 Dec. 2020, Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd Dec. 2020

मासिक पत्रिका

अजायब ✿ बानी

वर्ष–अठारहवां | अंक–आठवां | दिसम्बर–2020

5
सन्तों की रीत

15
सतगुरु को अपना बना लें

17
ऐसी जगह जहाँ सतगुरु बैठ सकते हैं

21
नाम अनमोल दात है

31
पूरी तरह से मग्न होना

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** ने पोलिकम ऑफसेट, नारायणा, फेस–1, नई दिल्ली–110 028 से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01

विशेष सलाहकार – **गुरमेल सिंह नौरिया**
96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

उप संपादक – **नन्दनी**
सहयोग – **परमजीत सिंह, राजेश कुक्कड़**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 225 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

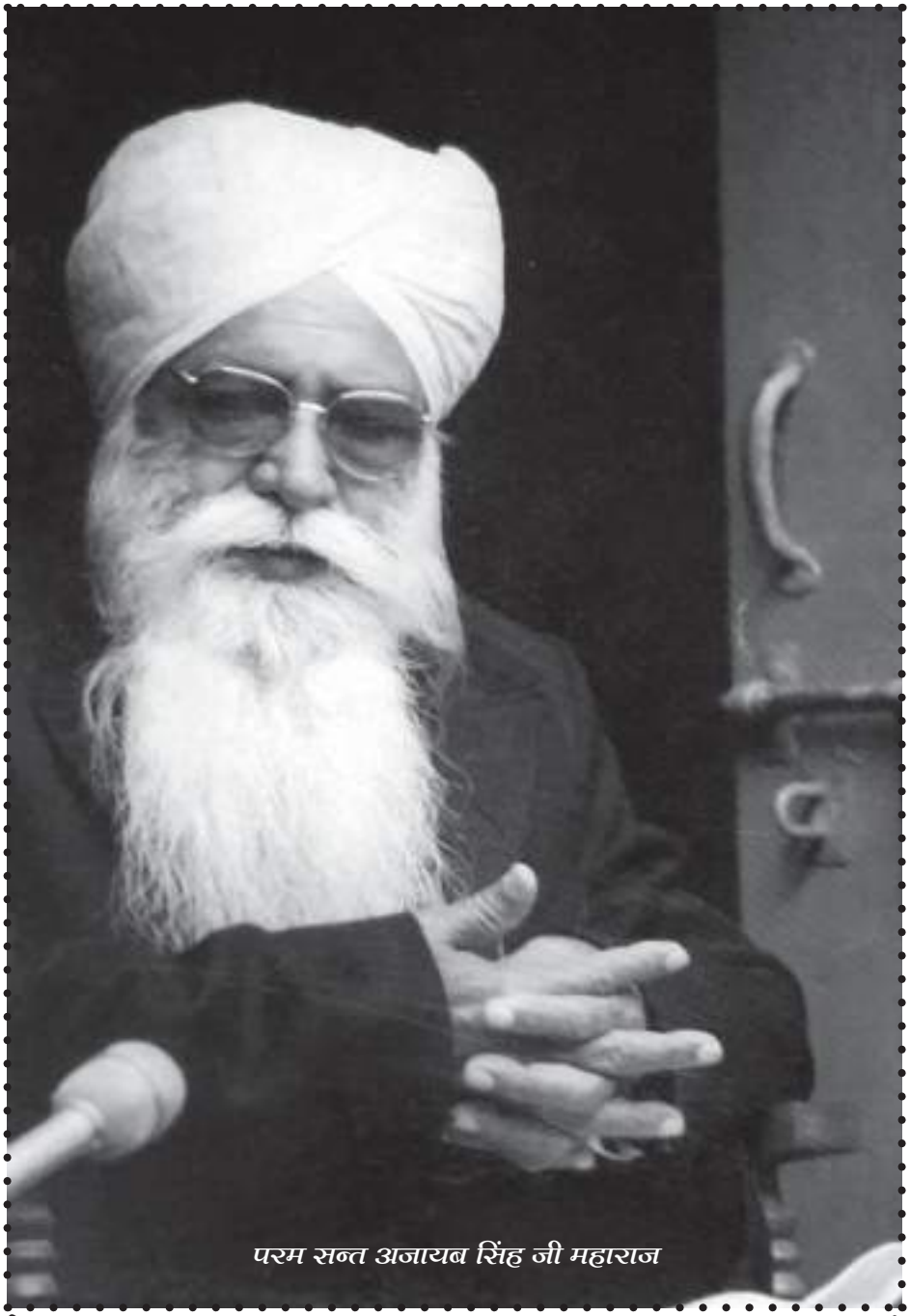

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

गुरु अर्जुनदेव जी
की बानी

25 फरवरी 1986

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सन्तों की रीत

16 पी. एस. आश्रम, राजस्थान

कुछ प्रेमियों ने गुरु गोबिंद सिंह जी के आगे विनती की कि परमात्मा रूप सन्त इस दु:खों की नगरी में आकर कष्ट क्यों उठाते हैं? गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा, ''कलयुग में पाप ज्यादा फैलते हैं इसलिए आम युगों से ज्यादा सन्त कलयुग में आते हैं।''

चली पाप की अजब कहानी, भागा धर्म छोड़ राजधानी।

पाप की कहानी इस तरह चली है कि धर्म अपनी राजधानी छोड़कर भाग गया है। धर्मशास्त्रों में महापुरुषों ने धर्म की चार राजधानियाँ ब्यान की हैं– राजा, साधु, पंडित और धर्मस्थान। पहले के राजा धार्मिक हुआ करते थे अगर अब भी कोई राजा धार्मिक है तो उसकी प्रजा में भी बहुत से लोग धार्मिक होंगे। आम कहावत है:

जथा राजा तथा प्रजा।

आजकल के राजाओं के बारे में गुरु नानकदेव जी महाराज ने अपनी बानी में इस तरह लिखा है:

कल काती राजे कसाई धर्म पंख कर उड़ रहया।
कूड़ अमावस सच चन्द्रमा दीसे नहीं कह चढ़या।
हों भाल बकुन्नी होई अंधेरा रहा न कोई।
विच हौंमे कर दुख रोई।।

पहली राजधानी–राजा थे। आप कलयुग में राजाओं को कसाई कहकर बयान करते हैं। राजाओं ने कलम रूपी छुरी हाथ में पकड़ी हुई है, झूठ का पसारा है, जैसे अमावस्या को सारी रात अंधेरा रहता है। दुनिया से सच आलोप हो गया है कोई धर्म और सच की बात नहीं करता।

इसलिए मैं लोगों को सच बताने के लिए जगह–जगह यात्राएं करता हूँ। राजाओं के पास या धर्मस्थानों पर जहाँ भी जाता हूँ वहाँ सब लोग अहंकार से भरे हुए हैं सभी कहते हैं कि मैं ठीक हूँ और कोई ठीक नहीं।

दूसरी राजधानी – साधु थे। पहले साधु–सन्त खुद सच्चे होते थे और अपने सेवकों को सच बोलने पर जोर देते थे। अब साधुओं में भी पाखंड ने डेरा डाल लिया है किसी की कमाई नहीं कोई संयम नहीं। वे झूठ बोलते हैं कि हम साधु–महात्मा हैं। उन्होंने नाम की कमाई में दस–बीस साल भी नहीं लगाए होते। जब वे खुद झूठ बोलते हैं तो उनकी पार्टियाँ भी झूठ बोलने पर जोर देती हैं। पलटू साहब कहते हैं:

जिसके साथ दस बीस उसका नाम महन्त।

आज कलयुग में साधु उसी को माना जाता है जिसकी पार्टी मजबूत है जिसके पीछे शोर मचाने वाले ज्यादा लोग हैं। जिसका आश्रम स्वर्ग जैसा बना हो, वहाँ आने–जाने वाले प्रेमियों को स्वर्ग जैसी सहूलियतें मिलती हैं और वे मस्त होकर कहते हैं:

ऐह जग मिट्ठा अगला किन डिट्ठा।

कबीर साहब कहते हैं कि दुनिया में रंगरलियाँ मनाते हुए परमात्मा नहीं मिलता अगर रंगरलियाँ मनाते हुए परमात्मा मिलता होता तो राजा–महाराजाओं को परमात्मा मिल जाता। आप कहते हैं:

सुखिया सब संसार है खाए और सोए।
दुखिया दास कबीर है जागे और रोए।।

ऐसा नहीं कि दुनिया में कोई साधु है ही नहीं, सच्चाई का बीज नाश नहीं होता। वही साधु है जो खुद नाम जपे और अपने सेवकों से भी नाम जपवाए। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

कोटन में कोऊ जो भजन राम को पावे।

धर्म–साधुओं के आसरे ही खड़ा है। कोई विरला ही साधु है जो खुद भजन करता है और प्रेमियों को भी भजन के लिए प्रेरित करता है। भाई गुरदास जी कहते हैं:

थम्में कोई ना साधु बिन, साधु ना दिस्से जग विच कोए।

सन् 1947 में हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का बँटवारा हुआ। उस समय पाकिस्तान के कायदे–आजम मौहम्मद अली जिन्हा का विचार था कि मैं हिन्दुस्तान के काफी हिस्से को पाकिस्तान में मिला लूँ। वह पंजाब को अपनी हद में मिलाना चाहता था लेकिन कामयाब नहीं हुआ अमृतसर से बहुत पीछे रह गया। जिन्हा ने अपने मुर्शिद से पूछा, ''हम हार क्यों रहे हैं? हमारे ऊपर रहम करें।'' मुर्शिद ने कहा, ''मुझसे ज्यादा जबरदस्त ताकत सन्त रूप में है उस ताकत के आगे मेरी पेश नहीं जाती।'' यह इशारा महाराज सावन सिंह जी की तरफ था।

उन दिनों महाराज सावन सिंह जी ने जीवों की खातिर बहुत खून दिया, अपनी सेहत खराब की जबकि पंजाब के सारे लोग महाराज सावन सिंह जी को मानने वाले नहीं थे बल्कि बहुत से लोग तो आपका विरोध भी करते थे। सन्तों की नजर प्रशंसको और विरोधियों की तरफ नहीं होती, उनकी नजर आत्मा की रक्षा करने के लिए होती है।

तीसरी राजधानी–पंडित थे। पहले के पंडित, पुजारी सच्चे–सुच्चे होते थे, वे पूजा–पाठ, जप–तप करते थे। आज ये पंडित, पुजारी ऐश–परस्त हो गए हैं, पाखंड का बोलबाला हो गया है। धर्मशास्त्रों में लिखा है कि पहले के समय में पंडित के घर बच्चा पैदा होता तो स्वर्ग का राजा इन्द्र घबरा जाता था कि यह जप–तप करके मेरे स्वर्ग की बादशाही छीन लेगा लेकिन आज के समय में पंडित के घर बच्चा पैदा होने पर तम्बाकू का पत्ता ही काँपता है कि यह मुझे जरूर पिएगा। अब इनकी बहादुरी सिर्फ तम्बाकू पीने तक ही रह गई है।

चौथी राजधानी–धर्मस्थान थे। एक समय ऐसा था कि हिन्दुस्तान में अगर कोई आदमी परेशान होता तो वह शान्ति प्राप्त करने के लिए गंगा, ऋषिकेश, तपोवन जैसे तीर्थों पर जाता। वह वहाँ जाकर भजन–अभ्यास करता उसे शान्ति मिलती थी। उस समय वहाँ ज्यादा आबादी नहीं थी लेकिन आज तीर्थयात्री गंगा नदी में शराब की बोतलें ठंडी करते हैं, वे खुद तो अपवित्र हैं गंगा को भी अपवित्र करते हैं। आजकल तीर्थस्थानों पर ज्यादा से ज्यादा सिनेमाघर बने हुए हैं। कबीर साहब कहते हैं:

गंगा तीर्थ जे घर करे पीवे निर्मल नीर।
बिन हर भक्त न मुक्त होय एयो कथ रहे कबीर।।

आपके आगे गुरु अर्जुनदेव जी का शब्द रखा जा रहा है, गुरु अर्जुनदेव जी बहुत महान सन्त हुए हैं। वैसे तो दुनियादार हर महात्मा की विरोधता करते आए हैं, जिस तरह धनवानों के पीछे शुरू से ही चोर लगे रहते हैं उसी तरह कमाई वाले महात्मा के पीछे हमेशा ही निन्दक लगे रहते हैं।

आप एक बहुत ही योग्य महात्मा थे। आपने अपने आपको योग्य सिद्ध करके अपने पिता गुरु रामदास जी से गद्दी प्राप्त की थी। आपके बड़े भाई को गद्दी न मिलने के कारण उसने आपकी बहुत विरोधता की। आपकी जायदाद पर कब्जा कर लिया, संगत को लालच देकर आपके पास जाने से रोका और आपकी बहुत निन्दा करवाई। आपके बड़े भाई ने उस समय के बादशाह से मेल–मिलाप करके आपको बहुत कष्ट दिलवाए। आपको तपते हुए तवे पर बिठाया गया, उबलते हुए गर्म पानी में खड़ा किया गया।

गुरु अर्जुनदेव जी ने बहुत महान कार्य किए। आपने अपने से पहले के सन्तों की बानी को इकट्ठा करके 'गुरु ग्रंथ साहब' तैयार किया ताकि सन्तमत का खजाना आलोप न हो जाए। आप बहुत शान्त स्वभाव के थे। कष्ट के समय आपके मुँह से यही निकलता रहा:

तेरा भाणां मीठा लागे, नाम पदार्थ नानक माँगे।

इस महान गुरु से कुछ शिष्यों ने विनती की कि महाराज जी! हमें सन्तों के बारे में बताएं कि उनका कैसा स्वभाव होता है, वे क्या करते हैं? आपने कहा, ''मैं तुम्हें **सन्तों की रीत** बताता हूँ, सन्त गुणों से भरपूर होते हैं लेकिन सन्तों में सात बड़े-बड़े गुण होते हैं। मैं तुम्हें एक-एक करके सन्तों के गुण बताता हूँ।''

शास्त्र तीखण काट डारयो मन न कीनो रोष।
काज ऊ आ को ले सवारयो तिल ना दीनों दोष।।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''अगर कोई पेड़ को कुल्हाड़ी से काटता है तो पेड़ बुरा नहीं मानता और काटने वाले को बद्दुआ भी नहीं देता। पेड़ हर किसी को अपनी छाया देता है, प्रेम-प्यार से उसका काम बनाता है; अग्नि में जलकर भी उसकी सर्दी को दूर करता है। बाजार में बिककर भी काटने वाले का फायदा ही करता है।''

इसी तरह सन्तों का हृदय पेड़ की तरह बहुत विशाल होता है। चाहे कोई सन्तों की निन्दा करे चाहे प्रशंसा करे वे किसी की तरफ ध्यान नहीं देते बल्कि वे सबको प्यार ही देते हैं। सन्त सेवकों का भला तो सोचते ही हैं बल्कि निन्दकों का भी भला ही सोचते हैं।

एक बार मूसा पैगम्बर ने खुदा से कहा, ''आप सब लोगों को रोजी देते हैं, आपको बहुत परेशानी होती होगी? आप यह ड्यूटी मुझे दे दें।'' खुदा ने कहा, ''मूसा! अभी तू अभ्यास कर तरक्की करके अंदर जा फिर जान सकेगा कि यह काम कैसे करना है?'' मूसा ने जिद्द की तो खुदा ने कहा, ''मूसा! तू एक दिन सबको रोजी देकर देख।'' मूसा ने सबको रोजी दी लेकिन एक आदमी को रोजी नहीं दी क्योंकि वह आदमी एक मरी हुई औरत को कब्र में से निकालकर उसके साथ बुरा कर्म कर रहा था।

शाम को जब मूसा खुदा के पास गया तो खुदा ने उससे पूछा, ''सबको रोजी-रोटी दे दी?'' मूसा ने कहा, ''हाँ जी! सबको रोजी दे

दी लेकिन एक आदमी को रोजी नहीं दी क्योंकि वह बुरा कर्म कर रहा था।'' खुदा ने कहा, ''अगर वह बुराई करता है तो अपने लिए करता है अगर मैं पाप देखूँ तो किसी को रोजी दे ही नहीं सकता।'' गुरु गोबिंद सिंह जी ने भी कहा है, ''रोजी देने वाला पापी और पुन्नी की तरफ नहीं देखता, वह सबको रोजी देता है।''

मन मेरे राम रहयो नित नीति।।

अब गुरु अर्जुनदेव जी उस प्रेमी से कहते हैं, ''प्यारेया! भक्ति कर, नाम जप, अंदर जाकर उस सच्चाई के साथ जुड़ जिस ताकत राम का नाम लेता है उस ताकत के साथ जुड़ना भी है। राम–राम कहने से राम नहीं मिलता और अल्लाह–अल्लाह कहने से अल्लाह नहीं मिलता।''

दयाल देव कृपाल गोबिन्द सुन सन्ता की रीत।।

परमात्मा दयाल है, सब पर दया करता है। कृपाल है कृपा का घर है। सन्त पापी–पुन्नी को नहीं देखते वे सब पर दया और परोपकार करने के लिए ही आते हैं, यही **सन्तों की रीत** है।

चरण ते उगाहे बेसहो शम ना रहयो शरीर।
महासागर नेह व्यापे खिन्न उतरयो तीर।।

जैसे कोई दूर से भागकर जहाज में बैठ जाता है, जहाज में बैठते ही उसकी थकावट दूर हो जाती है। वह बहुत जल्दी ही समुंद्र को पार कर लेता है और उसका पानी में डूबने का डर भी खत्म हो जाता है। इस भवसागर को पार करते हुए ऋषि–मुनि भी काँप उठे। इसी तरह जीव अनेक जन्मों में पाप–पुण्यों का बोझ उठाते–उठाते थक चुका है लेकिन जब सन्तों के नाम के जहाज में बैठ जाता है तो इसके पिछले पाप–पुण्यों की थकावट उतर जाती है। थोड़े ही समय में सन्त जीव को भवसागर से पार कर देते हैं, यमों का भय खत्म हो जाता है, यही **सन्तों की रीत** है।

चन्दन अगर कपूर लेपन तिस संगी नहीं प्रीत।
बिष्टा मत खोद तिल तिल मन न माने विपरीत।।

अब गुरु अर्जुनदेव जी धरती का दृष्टान्त देकर समझाते हैं अगर कोई धरती पर चन्दन का लेप करे उसे अच्छी सुगंधी दे तो धरती उससे प्यार नहीं करती अगर कोई धरती को तिल–तिल कर खोदे या उस पर बिष्टा करे तो धरती उससे नफरत नहीं करती। धरती के लिए दोनों एक समान हैं। कबीर साहब कहते हैं:

खोद खाद धरती सहे काट कूट वनराए।
कुटिल वचन साधु सहे और से सहा न जाए।।

गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं, ''देख प्यारेया! सन्तों का दिल धरती जैसा होता है। चाहे कोई उनकी निन्दा करे चाहे कोई उनकी प्रशंसा करे वे दोनों से एक जैसा प्यार करते हैं।

सन्त दोहां नू पोसदे भाव न गिने अभाव।

चाहे कोई प्यार से आए चाहे कोई उनका कत्ल करने के लिए आए वे दोनों के साथ प्यार करते हैं और दोनों की मुक्ति के लिए परमात्मा के आगे अरदास करते हैं कि हे परमात्मा! तू इन्हें माफ कर दे।

ऊँच नीच बिकार सुर्कत सलगन सब सुख छत्र।
मित्र शत्रु न कछु जाने सर्व जिया समात।।

अब आप आकाश का दृष्टान्त देते हुए कहते हैं, ''देख प्यारेया! आकाश पापियों–पुन्नियों, इंसानों–हैवानों, पशु–पक्षियों सबके ऊपर अपना छत्र रखता है। **सन्तों की यही रीत** है कि वे जब संसार में आते हैं तो वे सब कौमों, मुल्कों और समाजों को अपना घर समझते हैं, वे सबको इकट्ठा बिठाकर नाम जपवाते हैं। वे किसी की आलोचना या निन्दा नहीं करते बल्कि कहते हैं कि आप सच्चाई को अपनी आँखों से देखें।''

कर प्रगास प्रचंड प्रगटयो अंधकार विनाश।
पवित्र अपवित्र किरण लागी मन ना भयो बिखाद।।

अब आप सूरज का दृष्टांत देकर समझाते हैं, ''सूरज पापी–पुन्नी, अच्छी–बुरी सब जगह अपनी किरणें पहुँचाता है। सूरज के लिए मित्र–वैरी एक समान होते हैं, सन्तों का दिल भी इसी तरह का होता है। **सन्तों की यही रीत है** कि वे सूरज की तरह सबको अपना प्रकाश देते हैं।''

शीत मंद सुगन्ध चलयो सर्वथान समान।
जहाँ सा किछ तहाँ लागयो तिल ना शंका मान।।

अब आप कहते हैं, ''पवन जब चलती है तो पापियों–पुन्नियों, पशु–पक्षियों, अहंकारियों और पवित्र आत्माओं सभी को लगती है। सन्तों में भी पवन की तरह गुण होते हैं उनका प्यार अमीर–गरीब सबके साथ एक समान होता है।''

सुभाए अभाए जो निकट आवे शीत ता का जाए।
आप परखा कछु न जाणें सदा सहज सुभाए।।

अब आप प्यार से अग्नि की मिसाल देकर समझाते हैं, ''सन्तों में आग जैसा गुण होता है। आग के पास चाहे कोई प्यार से आए या बुरे ख्याल लेकर आए आग सबकी शीत दूर करती है। इसी तरह सन्तों के पास सतसंगी आए या गैर सतसंगी आए वे किसी की निन्दा नहीं करते, किसी में ऐब नहीं निकालते।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

मन्दा जाणा आपको अवर भला संसार।

चरण शरण सनाथ ऐहो मन रंग राति लाल।
गोपाल गुण नित गावो नानक भये प्रभ कृपाल।।

आप कहते हैं, ''आप दिन–रात, चलते–फिरते नाम के साथ जुड़े रहें। कृपाल परमात्मा गोपाल आपको अपने चरणों में जगह देगा।''

आपने सन्तों की सात निशानियाँ – पेड़, समुंद्र, धरती, आकाश, सूरज, पवन और अग्नि की मिसाल बताई है। सन्तों में यह गुण होता है कि वे अपने विरोधियों का भी भला ही माँगते हैं। क्राईस्ट ने परमात्मा से अपने विरोधियों के लिए यही प्रार्थना की थी, ''तू इन्हें माफ कर दे।''

जब महान मंसूर को सूली पर चढ़ाने लगे तब परमात्मा ने उससे कहा, ''बता! तुझे किस चीज की जरूरत है, जो तुझे सूली पर चढ़ा रहे हैं अगर कहे तो मैं इनका नाश कर दूँ?'' मंसूर ने कहा, ''आप इन लोगों को माफ कर दें इन्हें अपने चरणों में जगह दें। आप इनके दिल तब्दील कर दें ताकि ये आपकी भक्ति में लग जाएं। ये जान जाएं कि मंसूर इनके लिए क्या चाहता है?'' हम मालिक के प्यारों को इतने दु:ख और तकलीफें देते हैं फिर भी वे हमारे लिए परमात्मा के आगे प्रार्थना करते हैं कि हे परमात्मा! तू इन्हें माफ कर दे।

आप सब जानते हैं कि मैंने अपनी जिंदगी का बहुत सा हिस्सा जमीन के अंदर बैठकर बिताया है। खासकर जब परमात्मा कृपाल इन आँखों से दूर हो गए थे उन दिनों मैं शाम को आठ बजे से नौं बजे तक सिर्फ एक घंटे के लिए ही बाहर आता था।

जब रसल परकिन्स के साथ मिलाप हुआ तो उसने हुजूर का संदेश देने के लिए ज्यादा से ज्यादा प्रेरणा दी। जबकि हुजूर बहुत सख्त हुक्म देकर गए थे, ''तेरे अंदर बैठने से संगत का बहुत नुकसान होगा, जब बुरा बुराई से नहीं हटता तो भला भलाई से क्यों हटे?''

मैंने रसल परकिन्स से कहा अगर तू मुझे बाहर दुनिया में आने के लिए कहता है तो यह वायदा कर किसी की निन्दा या आलोचना नहीं करेगा। वही सन्त पार्टियों से निन्दा या आलोचना करवाते हैं जिन्होंने खुद कमाई नहीं की होती। वे नहीं जानते कि निन्दा करने से कितना नुकसान होता है, किसी के लिए प्रार्थना करने से हमारा कितना फायदा होता है।

जिस बाप ने बहुत मेहनत से पैसा कमाया होता है वह अपने बच्चों को वह पैसा शराब, नशे और जुए में खराब करने की इजाजत नहीं देता। वह हर तरीके से अपने बच्चे को समझाएगा कि पैसा बहुत मुश्किल से कमाया जाता है ये पैसा भविष्य में तेरे काम आएगा।

जिस सन्त ने दिन–रात कमाई की है भूख–प्यास काटी है वह किस तरह अपनी कमाई को बेकार कर सकता है, वह कैसे अपने सेवकों से कहेगा कि आप लोगों की निन्दा करके उनके पाप उठाएं और आग में जाएं। महाराज सावन सिंह जी कहा कहते थे, ''देखो प्यारेयो! आप जिसकी निन्दा करते हैं उसके पाप आपके खाते में जमा होंगे और आपके शुभ कर्म हैं उसके खाते में जमा होंगे।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

निन्दा भली काहू की नाहीं मनमुख मुग्ध करन।
मुँह काले तिन निन्दका नर्के घोर पवन।।

सन्त बनने के लिए बहुत कमाई की जरूरत है। गुरु अर्जुनदेव जी ने ऊपर जो दृष्टान्त दिए हैं ऐसा दिल तभी बनता है जब हमने दिन–रात मेहनत की हो, अपना आप परमात्मा पर न्यौछावर किया हो।

कुलवन्त बग्गा आपके पास ही बैठा है। आप उन दिनों की हालत इससे पूछ सकते हैं। यह उन दिनों हिन्दुस्तान आया हुआ था। उन दिनों में अगर कोई आदमी पश्चिम से आता तो यहाँ के लोग उसके पैरों के नीचे हाथ रखकर स्वागत करते थे। मेरा घर 77 आर.बी, श्री गंगानगर से 70 किलोमीटर की दूरी पर है। उस समय मैंने लोगों को यह कहलवा रखा था कि यहाँ का और पश्चिम का कोई भी आदमी मेरे पास न आए।

यह लोग बहुत डरते–डरते मेरे पास आए। जब मैंने लिन्डा की तरफ देखकर पूछा कि यह मेम कौन है? घबराहट में कुलवन्त ने अपनी पत्नी को रसल की पत्नी बता दिया। मैं चाहता था कि मैं अपने गुरु की याद में अकेला ही बैठकर रोऊँ, मैं उस समय को मुबारक समझता था। ***

04 नवम्बर 1988

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा गुफा दर्शन के समय दिया गया संदेश

सतगुरु को अपना बना लें

16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान

मैं अपने गुरु परमपिता कृपाल का धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने इस गरीब आत्मा पर अपनी रहमत की और दया की बारिश की। यह उन्हीं की दया थी जो मैं कर सका। प्यारेयो! आपको पता है कि दुनिया किस तरह भटकी हुई है, कोई कहता है कि मेरी माता है, कोई कहता है कि मेरा बेटा है, कोई कहता है कि मेरी जायदाद है, कोई कहता है कि मैं जवान हूँ, मैं ज्यादा पढ़ा–लिखा हूँ। हम इस मैं–मेरी के धंधे में ही उलझे हुए हैं। यह हम एक किस्म से अपने गले में फंदा कस रहे हैं।

भाग्यशाली जीव ही इस मैं–मेरी से अपने ख्याल को निकालकर गुरु को अपना बना सकते हैं। अगर हम **सतगुरु को अपना बना लेते हैं** तो

गुरु को हमारा फिक्र हो जाता है कि मैंने इससे नाम जपवाना है और इसे अंदर भी लेकर जाना है। शिष्य, गुरु से ज्यादा तरक्की नहीं कर सकता शिष्य, गुरु की दया लेकर ही अंदर जा सकता है।

मेरे माता–पिता मेरी शादी के लिए सबसे ज्यादा मेरी आँखों के आगे यही सहूलियत रखते थे कि बच्चे माता–पिता की लाठी होते हैं। तुझे भी शादी करवानी चाहिए बच्चे पैदा करने चाहिए। मैं उन्हें प्यार से कहता और कभी–कभी आँखों से पानी भी निकालता कि यह सुख मेरे कर्मों में नहीं है, आप जिसे सुख कहते हैं मैं इसे सुख नहीं समझता।

मैं पिछले दिनों काफी बीमार हुआ, इतना कमजोर हुआ कि मैं अपने आप उठ भी नहीं सकता था। मेरे आस–पास जो सेवादार थे उनमें से मेरे परिवार या जाति का कोई आदमी नहीं था। मैंने गुरमेल, पप्पू और मिस्टर ओबराय से पूछा कि तुम मेरे साथ इतनी हमदर्दी क्यों करते हो? प्यारेयो! ये सब हुजूर कृपाल की दया ही है कि उसने आपको यह प्रेरणा दी। मेरे माता–पिता मुझे लालच देते थे कि बच्चे ही बूढ़ों की लाठी होते हैं। मैं बूढ़ा हूँ काफी बीमार हूँ। क्या बच्चे इससे ज्यादा सेवा कर सकते हैं?

अगर हम गुरु की भक्ति करें, गुरु के हो जाएं तो गुरु पर्दे के पीछे और प्रत्यक्ष रूप से भी सब कुछ करता है। यह सवाल देखने और समझने का है कि वह गुरु की दया समझता है या अपनी चतुराई समझता है।

आपने इस जगह के बारे में काफी कुछ सुना है। आपने यहाँ से यही प्रेरणा लेनी है कि किस तरह यहाँ किसी आत्मा ने गुरु की दया से अभ्यास किया। उसकी श्रद्धा को देखकर गुरु ने उसकी आँखें बाहर से बंद करके अंदर खोली। हम भी सिमरन के जरिए गुरु की दया को प्राप्त कर सकें। आप उठते–बैठते, सोते–जागते गुरु का सहारा समझें, **सतगुरु को अपना बना लें**। गुरु ने हमें जिस 'शब्द–नाम' की ताकत के साथ जोड़ा है वह 'शब्द–नाम' कण–कण में व्यापक है। ***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से.....

09 जनवरी 1992

ऐसी जगह जहाँ सतगुरु बैठ सकते हैं

मुम्बई

आप सभी प्रेमियों का यहाँ परमात्मा सावन–कृपाल के नाम में स्वागत है। मुझे आप सब लोगों से मिलकर बहुत खुशी हो रही है। आप जानते हैं कि एक पहलवान दूसरे पहलवान से मिलकर और एक नशेड़ी दूसरे नशेड़ी से मिलकर खुश होता है। उसी तरह एक सतसंगी दूसरे सतसंगी से मिलकर खुश होता है। सतगुरु सदा अपने शिष्यों से मिलकर खुश होते हैं। मैं आप लोगों से मिलकर और आप लोगों के साथ अभ्यास में बैठकर बहुत खुश हूँ।

सन्तमत मन–बुद्धि का विषय नहीं। सन्तमत अभ्यास करके अंदर जाकर परमात्मा से मिलने का मार्ग है। हम इस छह फुट के शरीर के अंदर जाकर ही सच्चाई का अहसास कर सकते हैं, अपने प्यारे प्रभु से मिल सकते हैं। दुनिया में आए गुरुओं का उद्देश्य तभी पूरा होता है जब हम उनकी आज्ञा मानकर सर्वशक्तिमान परमात्मा से मिलते हैं।

कबीर साहब कहते हैं, ''हम अंदर जाकर ही नाम का मोती प्राप्त कर सकते हैं, यह वह सच है जो हमें अंदर जाकर ही प्राप्त होता है। सन्त पढ़ने को बुरा नहीं कहते। जो सन्त अंदर जाता है वही पढ़ा–लिखा है।''

महाराज कृपाल सिंह जी अक्सर कहा करते थे, ''परम सत्य को महसूस करने के लिए इस मानव शरीर की प्रयोगशाला में प्रवेश करना बहुत जरूरी है।''

मुझे वह समय याद है जो मैंने बाबा बिशनदास जी के साथ बिताया है। मैंने बाबा बिशनदास जी से 'दो–शब्द' का भेद लिया था। बाबा बिशनदास जी नाभा स्टेट के शाही परिवार से ताल्लुक रखते थे, आप

बहुत पढ़े-लिखे थे। जब आप बाबा अमोलक दास से मिलने गए तो आपने सोचा अगर मैं इनसे किताबों के बारे में बात करने की कोशिश करूँगा तो मैं इनसे कुछ प्राप्त नहीं कर सकूंगा। आपने बाबा अमोलक दास से गरीब बनकर यही कहा, ''मुझे नर्क से बाहर निकाल दें।'' बाबा अमोलक दास जी ने आपको अमोलक दात देकर भरपूर कर दिया।

प्यारेयो! गुरुओं की कृपा से मुझे अपना जीवन बनाने का अवसर मिला। मुझे धन या दुनियावी चीजों से शान्ति नहीं मिली केवल गुरुओं की कृपा से ही मैं शान्ति पाने में सफल हो सका। मैं कई अमीर लोगों को देखता हूँ जिनके पास बहुत धन और ताकत है लेकिन वे संतुष्ट नहीं हैं। जिनके पास नाम है वे ही संतुष्ट हैं क्योंकि शान्ति नाम में है और जो नाम जपते हैं वे संतुष्ट हो जाते हैं।

हम अपने प्यारे गुरु का शुक्रिया करते हैं जिन्होंने हमें अपना यश गाने का मौका दिया। आज हम गुरु प्यार के भजन गाएंगे। जो प्रेमी भजन गाना चाहता है वह अपना हाथ खड़ा करे। एक प्रेमी ने यह भजन गाया:

अज शुभ दिहाड़ा ऐ, भागां नाल आया ऐ।
सतगुरु जी प्यारे दा, अज दर्शन पाया ऐ।।

हमारे प्यारे गुरु कृपाल पच्चीस साल दुनिया में दूर-दूर, जहाँ आत्माएं उनकी याद में बैठी तड़प रही थी उनकी प्यास बुझाने के लिए वहाँ गए। मैं पहले कभी गुरु कृपाल से नहीं मिला था और न ही मुझे कोई उनकी प्रशंसा करने वाला मिला था। यह आपकी दया थी कि आप दिल्ली से पाँच सौ किलोमीटर चलकर मेरे पास आए।

आपने आने से पहले अपने सेवक को मेरे पास भेजा कि मैं आश्रम में ही रहूँ। आपको पता था कि कौन आपकी याद में बैठा है। आपने खुद मुझे ढूंढ़ा। मुझे बचपन से ही परमात्मा की याद में बैठने की आदत थी।

जब मैं पहली बार शारीरिक तौर पर अपने प्यारे गुरु कृपाल से मिला, उस समय प्रेमियों ने यह भजन गाया। जब भी प्रेमी इस भजन को गाते हैं तो यह भजन उन पलों की याद को तरो-ताजा कर देता है। जब आप इस भजन को ध्यान से पढ़ते हैं तो आपको इस भजन के हर शब्द में कुछ छिपा हुआ मिलता है।

मैं अक्सर कहा करता हूँ कि मैंने अपने प्यारे गुरु से कभी कोई सवाल नहीं किया था। आप जब मुझसे मिले तो मैंने आपसे यही कहा, ''मैं एक कुँवारी लड़की की तरह हूँ, बचपन से ही मैं आपकी याद और इंतजार में बैठा हूँ। मेरा दिल-दिमाग खाली है मुझे नहीं पता कि मैंने आपसे क्या पूछना है?'' यह सुनकर महाराज कृपाल सिंह जी ने कहा, ''मैं दिल-दिमाग खाली देखकर ही तेरे पास आया हूँ, मेरे आस-पास दिमागी पहलवान बहुत हैं। ***

गुरु रामदास जी की बानी
12 मई 1988

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

नाम अनमोल दात है

कोलंबिया DVD No-540 (1)

इतिहास में आता है कि महमूद गजनवी रात को भेष बदलकर अपनी प्रजा का ख्याल रखता था कि प्रजा दु:खी है या सुखी है? एक रात वह अपने महल से बाहर निकला तो उसे आगे चार आदमी मिले। महमूद गजनवी ने उनसे पूछा कि तुम लोग कौन हो? उन्होंने कहा कि हम चोर हैं। महमूद गजनवी को उनकी सच्चाई बहुत पसंद आई। उन आदमियों ने महमूद गजनवी से पूछा कि आप कौन हैं? महमूद गजनवी ने कहा, ''मैं भी चोर हूँ।'' आपको पता है कि जब एक ही ख्याल के इंसान मिल जाएं तो वे आगे बढ़ने की सोचते हैं। उन्होंने कहा कि हमारा गिरोह तो बन गया है अब इसमें किसी को सरदार भी बनना चाहिए।

सरदार बनने के लिए एक–दूसरे के गुण देखने बहुत जरूरी थे। वे सब एक दूसरे से गुण पूछने लगे। एक ने कहा, ''अगर मैं रात में किसी को एक बार देख लूँ तो दिन में उसे आसानी से पहचान सकता हूँ।'' दूसरे ने कहा, ''मैं जानवरों की बोली अच्छी तरह समझ लेता हूँ।'' तीसरे ने कहा, ''मैं धन का पता लगा लेता हूँ।'' उस समय चाँदी की करंसी थी लोग धन को अपने घरों में दबाकर रखते थे। चौथे ने कहा, ''अगर ऊँचे महल में चढ़ना हो तो मैं इस तरह की कमंद (रस्सी की सीढ़ी) लगाना जानता हूँ कि चाहे कितने भी आदमी उस पर चढ़ जाएं वह टूटती नहीं।''

महमूद गजनवी सोच रहा था कि मेरी भी बारी आने वाली है, मैं इन्हें क्या जवाब दूँ। उन्होंने महमूद गजनवी से पूछा कि आप भी अपना गुण जाहिर करें? महमूद गजनवी ने कहा, ''मेरी दाढ़ी में यह गुण है चाहे सैंकड़ो आदमियों को फाँसी लगने वाली हो और मैं एक बार अपनी दाढ़ी हिला दूँ तो सारे ही फाँसी के तख्ते से छूट सकते हैं।''

सारे चोरों को महमूद गजनवी का गुण पसंद आया, उन्होंने महमूद गजनवी को अपना सरदार मान लिया। उन्होंने सलाह की कि राजा के महल में चोरी की जाए। महल में चोरी की, माल इकट्ठा करके ले गए।

महमूद गजनवी को पता तो था कि माल कहाँ है, चोर कौन है? सुबह कचहरी में सबको बुला लिया गया। जब सब महल में चोरी करने के लिए जा रहे थे तो रास्ते में कुत्ता भी भौंका था। उन्होंने पूछा कि यह कुत्ता क्या कह रहा है? जो चोर जानवर की आवाज पहचानता था उसने कहा कि कुत्ता यह कह रहा है कि तुम्हारे में एक बादशाह भी है। यह सुनकर सब खिलखिलाकर हँसे। जिस चोर में यह गुण था कि मैं रात में जिसे एक बार देख लूँ उसे दिन में आसानी से पहचान सकता हूँ। जब वह चोर बादशाह के सामने पेश हुआ तो उसने कहा कि हम इकबाल करते हैं और वायदा भी करते हैं कि हम आगे से कभी चोरी नहीं करेंगे, कोई बुरा काम नहीं करेंगे और सदा आपके वफादार बनकर रहेंगे लेकिन अब आप अपनी दाढ़ी हिला दें। दाढ़ी को तो हिलना ही था, बादशाह ने उन्हें माफ कर दिया।

यह तो एक कहानी है सच्चाई क्या है? एक बार रात के समय कृपाल सिंह जी हुजूर सावन सिंह जी के पैर दबा रहे थे। कृपाल सिंह जी बातों–बातों में पूछने लगे, ''महाराज जी! अंदर किस तरह महसूस होगा?'' हुजूर सावन ने कहा, ''कृपाल सिंह! बाहर के नक्शों और अंतरी नक्शों में कोई फर्क नहीं होता, तू देख सकता है अंदर यह सब दिखाई देगा।''

परमात्मा इंसानी जामें में क्यों आता है? हम भी उन चोरों की तरह हर तरह की ठगी–बेईमानी करते हैं, नशे करते हैं। परमात्मा भी अपना भेष बदलकर इंसानी जामें में आकर हमें अपना भेद बताता है कि मेरे अंदर ये गुण हैं। हम ऐबी–पापी जब अंदर जाकर उसकी कचहरी में

दाखिल होते हैं तो हम यह वायदा करते हैं कि अब हम कोई गलती नहीं करेंगे आपके हुक्म में रहेंगे, आप हमें माफ कर दें। प्यारेयो! वह रहमत और माफी का समुंद्र है, वह माफ करने के लिए ही आता है।

आपके आगे गुरु रामदास जी का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है। पहले आप नाम की महिमा गाते हैं कि वे जीव कितने भाग्यशाली हैं जिन्हें नाम मिल जाता है। जिन्हें इंसानी जामें में आकर नाम नहीं मिलता उनका जन्म बर्बाद चला जाता है, नाम के बगैर यह जन्म किसी लेखे में नहीं।

सब धर्मों के लोग यह तो मानते हैं कि नाम के बगैर मुक्ति नहीं, नाम ही मुक्तिदाता है लेकिन किसी को यह नहीं पता कि नाम क्या चीज है, नाम कहाँ से मिलता है और उस नाम के क्या फायदे हैं? सन्त–महात्मा नाम रूप होते हैं वे हमें नाम के फायदे बताते हैं और शब्द–नाम के साथ जोड़ते हैं। पलटू साहब कहते हैं:

नाम नाम सब कहत है नाम न पाया कोय।
नाम न पाया कोय नाम की गत है न्यारी।।

पलटू साहब बहुत बेधड़क होकर ब्यान करते हैं कि सन्त ही नाम के वाकिफकार हैं, वे ही नाम से मिला सकते हैं। गुरु रामदास जी कहते हैं:

जननी जने तां भक्तजन या दाता या सूर।
नहीं तो जननी बाँझ रहे काहे गँवाए नूर।।

इंसानी जामा पाकर जिनके हृदय में नाम नहीं बसा, नाम के लिए तड़प पैदा नहीं हुई उनकी माता ने उन्हें जन्म ही क्यों दिया? वह बाँझ ही क्यों न बैठी रही। उसी माता का जन्म लेखे में होता है जिसका बेटा नाम जपता है भक्ति करता है। जो परमात्मा के चुनाव में नहीं आए, जिन्हें नाम नहीं मिला और जो नाम की कमाई नहीं करते उनके लिए कबीर साहब प्यार से कहते हैं:

जो प्रभ किए भक्त ते बाहँज, तिनते सदा डराने रहिए।

सन्त–महात्मा हमें बताते हैं कि नाम दो प्रकार का है, एक वर्णात्मक है और दूसरा धुनात्मक है। वर्णात्मक नाम उसे कहते हैं जो लिखा, पढ़ा और बोला जाता है। धुनात्मक नाम लिखने–पढ़ने और बोलने में नहीं आता। वर्णात्मक नाम फैले हुए ख्याल को इकट्ठा करने का जरिया है लेकिन धुनात्मक नाम मंजिल है।

जिन हरि हिरदै नामु न बसिओ तिन मात कीजै हरि बांझा।।
तिन सुंजी देह फिरहि बिनु नावै ओइ खपि खपि मुए कुरांझा।।

नाम अनमोल दात है, यह नाम हमें साधु–सन्तों से ही प्राप्त हो सकता है लेकिन हमारा जानी दुश्मन मन हमें अजीब–अजीब अभ्यासों में फँसाता है। हम कभी जप–तप, पूजा–पाठ, दान–पुण्य करते हैं और कभी धर्मस्थानों की यात्रा करने चल पड़ते हैं। हम कभी अष्टांग योग करते हैं, कभी पढ़–पढ़ाई की भूल–भुल्लैया में पड़ जाते हैं। इस तरह हम अपनी जिंदगी का बहुत सा हिस्सा इन्हीं साधनों में बर्बाद कर देते हैं।

जिस तरह हम छाछ में मधानी डालकर जितना मर्जी बिलोएं झाग ही आएगी मक्खन नहीं आएगा। 'शब्द–नाम' की कमाई करना एक किस्म का दूध के अंदर मधानी चलाना है जिससे मक्खन आता है। सुरत शब्द का अभ्यास, नाम का रास्ता हमें सन्त–महात्माओं से ही मिलता है, इसे हम इंसानी जामें में ही प्राप्त कर सकते हैं।

नाम प्राप्त करने के लिए हमें कोई धर्म परिवर्तन नहीं करना पड़ता, समाज या बाल–बच्चे नहीं छोड़ने पड़ते और न ही कोई कारोबार बदलने की जरूरत पड़ती है। हमने अपना–अपना कारोबार करना है, अपने–अपने समाज में रहना है। दुनिया में रहते हुए रोजाना सिर्फ तीन–चार घंटे का समय निकालकर अभ्यास करना है। जब हम रोज–रोज अभ्यास करते हैं तो हमें इसमें महारत पैदा हो जाती है लेकिन महात्मा की रहनुमाई के बिना हम अभ्यास नहीं कर सकते।

महाराज सावन सिंह जी, महाराज कृपाल सिंह जी के गाँव सैयद कसा गए। वहाँ गर्म ख्याली लोगों की सभा बनी हुई थी उन लोगों ने आपसे काफी सवाल किए। एक आदमी ने कहा, ''महात्मा जी! आप भी अपना कोई मजहब बनाएं, इसका कोई नाम रखें।'' महाराज सावन सिंह जी ने हँसकर कहा, ''कुँए पहले ही बहुत खुदे हुए हैं लोगों ने पहले ही बहुत समाज बनाए हुए हैं, नया समाज बनाने की क्या जरूरत है।''

मेरे मन जपि राम नामु हरि माझा।।

गुरु साहब प्यार से कहते हैं हे मन! तूने बाहर के बहुत स्वाद और लज्जतें ले ली हैं बहुत फेरे लगा लिए हैं लेकिन चौरासी खत्म होने में नहीं आती, आज वक्त है कि तू नाम की कमाई में लग। हमें पता ही है कि जब हम नाम की कमाई करने लगते हैं तो मन के घर में स्यापा पड़ जाता है, उसे दु:ख होता है। मन को पता है कि मैं किसी और साधन से बस में नहीं आता अगर इस शख्स ने नाम ले लिया, यह कमाई करने लगा तो यह मुझे बस में कर लेगा, मुझे कैद कर लेगा। कैद होने से डरता हुआ मन हमें 'शब्द–नाम' की कमाई नहीं करने देता। मन जैसा कोई मित्र नहीं और मन जैसा कोई दुश्मन भी नहीं। भटका हुआ मन तबाही मचा देता है, शान्त मन परमात्मा से मिला देता है।

महात्मा हमें बताते हैं अगर हमने मन को बस में करना है तो हमें मन की आदत के बारे में सोचना पड़ेगा। हमें पता है कि मन लज्जत, स्वाद का आशिक है लेकिन लज्जत सदा इसे पकड़ भी नहीं सकती। यह एक को खाता है दूसरी को पकड़ता है। हमने सबसे पहले इसे वह स्वाद देना है जिसे पाकर यह तृप्त हो जाए, वह लज्जत 'शब्द–नाम' की है।

कोई कौड़ियां या पैसे माँग रहा हो अगर हम उससे कोड़ियाँ या पैसे छीने तो वह मरने–मारने के लिए तैयार हो जाएगा अगर हम उसकी तरफ डॉलर कर दें तो उसकी कौड़ियों वाली मुट्ठी अपने आप ही ढ़ीली हो

जाएगी। इसी तरह अगर मन को बस में करना है तो इसे 'शब्द–नाम' की लज्जत दे दें, यह विषय–विकारों के स्वाद अपने आप ही छोड़ देगा।

हरि हरि कृपालि कृपा प्रभि धारी गुरि गिआनु दीओ मनु समझा।।

जब परमात्मा हमारे ऊपर मेहर करता है हमें सन्तों की शरण में ले आता है। सन्त हमारे ऊपर दया करके हमें 'शब्द–नाम' के साथ जोड़ देते हैं फिर हमारी समझ में आता है कि इस गुप्त नाम के आधार पर ही खंड–ब्रह्मांड चल रहे हैं जिसने सारी दुनिया की रचना पैदा की है।

हरि कीरति कलजुगि पदु ऊतमु हरि पाईऐ सतिगुर माझा।।

सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलयुग चार युग हैं, हर युग में एक ही साधन कारगर नहीं होता। अपने–अपने युगों में परमात्मा से मिलने के साधन होते हैं। कलयुग में शब्द–नाम की कमाई में ही मुक्ति रखी हुई है।

कलयुग में बिन नाम निशानी मुक्त न होगी नेह च मानी।

स्वामी जी महाराज कहते हैं:

कलयुग में कर्म धर्म न कोई, नाम बिना उद्धार न होई।

प्यारेयो! हम कलयुग में पैदा हुए हैं हमें कलयुग का धर्म पढ़ना होगा, कलयुग में मुक्ति के साधन 'शब्द–नाम' की कमाई को अपनाना पड़ेगा। हम नाम रूपी गुरु की शरण में जाकर ही शब्द–नाम प्राप्त कर सकते हैं। गुरु हमें सिर्फ अक्षर ही नहीं बताते, नाम तवज्जो होती है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर नाम अक्षर या लफ्ज होते तो गुरु के पास जाने की क्या जरुरत थी। कोई लफ्ज लेकर उसे जपा जा सकता था।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

गुरु का शब्द गुरु थां टिके होर थां प्रकट न होय।

सन्त–महात्मा नाम को हमारे अंदर टिका देते हैं, प्रकट कर देते हैं। जब महात्मा हमें नामदान का भेद देते हैं तो हमें अपने–अपने कर्मों के

मुताबिक ही उसका अनुभव होता है। अपने कर्मों के मुताबिक ही हम उस कीर्तन आवाज को सुनते हैं इकबाल करते हैं और उस प्रकाश को भी देखते हैं। पति–पत्नी के भी एक जैसे कर्म नहीं होते, सबको एक जैसा अनुभव नहीं होता।

हउ बलिहारी सतिगुर अपुने जिनि गुपतु नामु परगाझा।।

जब हम उस प्रकाश को देखने लग जाते हैं, उस आवाज को सुनने लग जाते हैं तब हमें गुरु की महिमा का ज्ञान होता है कि महात्मा हमें कितनी अमोलक चीज देने के लिए आते हैं। मैं ऐसे गुरु पर बलिहार जाता हूँ, कुर्बान जाता हूँ कि वह गुप्त नाम जो कण–कण में व्यापक था जिसे हम कभी देख नहीं सकते थे गुरु ने वह नाम हमारे अंदर प्रकट कर दिया।

दरसनु साध मिलिओ वडभागी सभि किलबिख गए गवाझा।।

आप कहते हैं, ''जो आत्माएं नाम के साथ जुड़ जाती है नाम को प्राप्त कर लेती हैं वे आत्माएं दूसरों को भी जाकर प्रेम–प्यार से बताती हैं कि साधु के दर्शनों से हमारे अनेकों पाप और ऐब कट जाते हैं। दुनिया में देखने वाली उत्तम से उत्तम चीज साधु के दर्शन हैं।''

सतिगुरु साहु पाइआ वड दाणा हरि कीए बहुत गुण साझा।।

आप कहते हैं, **''सतगुरु नाम का शाह है, वह दाता है नाम की दात देता है। सतगुरु हमारी साझ (मित्रता) परमात्मा के साथ करवा देता है। हमारे बहुत ऊँचे भाग्य थे कि हमें ऐसे सतगुरु मिले जिन्होंने हमारी साझ परमात्मा के साथ करवा दी।''**

जिन कउ कृपा करी जगजीवनि हरि उरिधारिओ मन माझा।।

जब हम सतसंग सुनते हैं तो हमारे दिल में ख्याल आता है कि महात्मा ने 'शब्द–नाम' की कौन सी फीस रखी है। उन्होंने नाम मुफ्त में ही देना है, कभी भी जाकर नाम ले लेंगे लेकिन यह हमारे बस में नहीं।

गुरु साहब प्यार से कहते हैं जिनके ऊपर परमात्मा दया–मेहर करता है उन्हें ही महात्मा की शरण में लाता है। महात्मा के पास उन लोगों की अमानत होती है, महात्मा कभी किसी की अमानत नहीं रखते। परमात्मा ने महात्माओं को अमानत देने के लिए ही संसार में भेजा होता है। नाम उन्हें ही मिलता है जिनका परमात्मा के दरबार में फैसला हो चुका होता है कि अब मैंने इन्हें चौरासी में जन्म–मरण के चक्कर में नहीं भेजना।

धरमराइ दरि कागद फारे जन नानक लेखा समझा।।

आप शब्द के आखिर में कहते हैं कि नाम का क्या फायदा है, महात्मा की शरण में क्यों जाना है? महात्मा के अंदर यह गुण है कि वह सेवक के जन्म–जन्मांतर के जो कर्म हैं उनका हिसाब धर्मराज के साथ कर लेता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''काल किसी के कर्मों को एक रत्ती जितना भी माफ नहीं करता, उन कर्मों को शिष्य भोगे या गुरु भोगे।'' शिष्य की ताकत तो हम जानते ही हैं अगर काँटा भी चुभ जाए तो शिष्य सारी रात गुरु का ध्यान करता है कि आप मुझे यह दर्द न होने दें।

गुरु में यह ताकत होती है कि गुरु शिष्य के जन्म–जन्मांतर के लेखे को अपने हाथ में ले लेता है। सतगुरु हमारे लेखे के कागज को ही फाड़ देते हैं, वे इससे ज्यादा हमारे ऊपर और क्या दया करेंगे?

जो महात्मा हमसे कौम, मजहब न छुड़वाए न हमारे ऊपर बोझ बनकर बैठे और अपने दस नाखूनों की किरत से अपना गुजारा करता हो फिर भी हम ऐसे महात्मा से फायदा न उठाएं तो इससे ज्यादा हमारी और क्या लापरवाही हो सकती है? ***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा सवालों के जवाब

27 फरवरी 1980

पूरी तरह से मग्न होना

राजस्थान

एक प्रेमी: *गुरु के लिए भजन गाते हुए मैंने महसूस किया है मेरे अंदर अहंकार आ जाता है कि मैं अच्छा गा रहा हूँ । मैं यह जानना चाहता हूँ कि भजन गाते हुए मुझे क्या महसूस करना चाहिए?*

बाबा जी: यह प्रश्न पहले भी कई बार पूछा गया है हो सकता है यह प्रश्न मासिक पत्रिका में भी छपा हो। जब हम गुरु के लिए भजन गाते हैं उस समय हमारे अंदर अपने गुरु के लिए प्यार और स्नेह होना चाहिए। इसके अलावा हमारे अंदर और किसी किस्म का विचार नहीं आना चाहिए क्योंकि गुरु के लिए भजन गाने का बहुत महत्व है।

जो लोग मिलकर गुरु के लिए भजन गाते हैं ऐसे लोगों को गुरु नानकदेव जी भजन मंडली कहा करते थे। जब लोग मिलकर गुरु के लिए भजन गाते हैं उस समय उनके अंदर प्यार और नम्रता होती है। सभी लोगों का प्यार गुरु की तरफ होता है।

जब हम प्रेम–प्यार से भजन गाते हैं तो गुरु को भी अच्छा लगता है और वह उतने ही प्यार से जवाब देता है। उस समय के प्रेम को गुणा किया जा सकता है। इस तरह गुरु और शिष्यों के बीच प्यार बढ़ जाता है।

जब हम गुरु के लिए भजन गा रहे होते हैं उस समय हमारे अंदर अहंकार नहीं आना चाहिए और हमें यह भी नहीं सोचना चाहिए कि हम जो गा रहे हैं वह ठीक है या नहीं, या हम बहुत अच्छा गा रहे हैं?

जब हम भजन गाते हैं उस समय हमारे अंदर गुरु के लिए नम्रता और प्यार होना चाहिए। अगर हम प्यार और नम्रता के साथ गुरु के भजन

गाते हैं तो भजन गाने से हमारे बहुत से पाप दूर हो जाते हैं और हम गुरु की दया प्राप्त करते हैं। जब हम भजन गाते हैं तो उस समय हमें गुरु के अलावा कुछ भी याद नहीं रखना चाहिए।

मैं जब अपने प्यारे गुरु कृपाल के लिए भजन गाता था उस समय मेरे अंदर अपने गुरु के लिए नम्रता और प्यार ही भरा होता था। मैं सिर्फ अपने गुरु कृपाल का सुंदर रूप ही देखता था और मुझे यह भी पता नहीं होता था कि मेरे साथ और कितने लोग भजन गा रहे हैं।

जब आप भजन गाते हैं उस समय आपको पूरी तरह से भजनों के अंदर लीन हो जाना चाहिए। वहाँ बैठे हुए दूसरे लोगों को भी भजन गाने में शामिल होना चाहिए, यह वातावरण को चार्ज करता है और आप सभी को ग्रहणशील बनाता है।

जिस तरह कोई मरीज डॉक्टर के पास जाकर डॉक्टर से प्रार्थना करता है कि कृपया मुझे ठीक करें। उसी तरह हमारे ऊपर कर्मों का बोझ है, जब हम गुरु के पास जाते हैं तो हमें भजन गाने का मौका मिलता है हमें भजनों के द्वारा गुरु के आगे प्रार्थनाएं करनी चाहिए। गुरु नानक साहब अपने एक भजन में कहते हैं:

असी मैले सतगुरु जी, ऊजल कर दे ऊजल कर दे।
हम मैले तुम ऊजल करते, हम निर्गुण तू दाता।।

जब हम भजन गाते हैं तब हमें इस तरह की प्रार्थना करनी चाहिए, शिष्य का गुरु के लिए भजन गाना एक तरह की प्रार्थना है। जब महाराज कृपाल पहली बार मेरे आश्रम आए तो मैंने यह भजन गाया:

अज शुभ दिहाड़ा ऐ, भागां नाल आया ऐ।
सतगुरु जी प्यारे दा, अज दर्शन पाया ऐ।।

आज मैं अपने प्यारे सतगुरु का दर्शन कर रहा हूँ। यह मेरे जीवन का सच है कि मैंने ऐसा शुभ दिन पहले कभी नहीं देखा। मुझे यकीन नहीं था

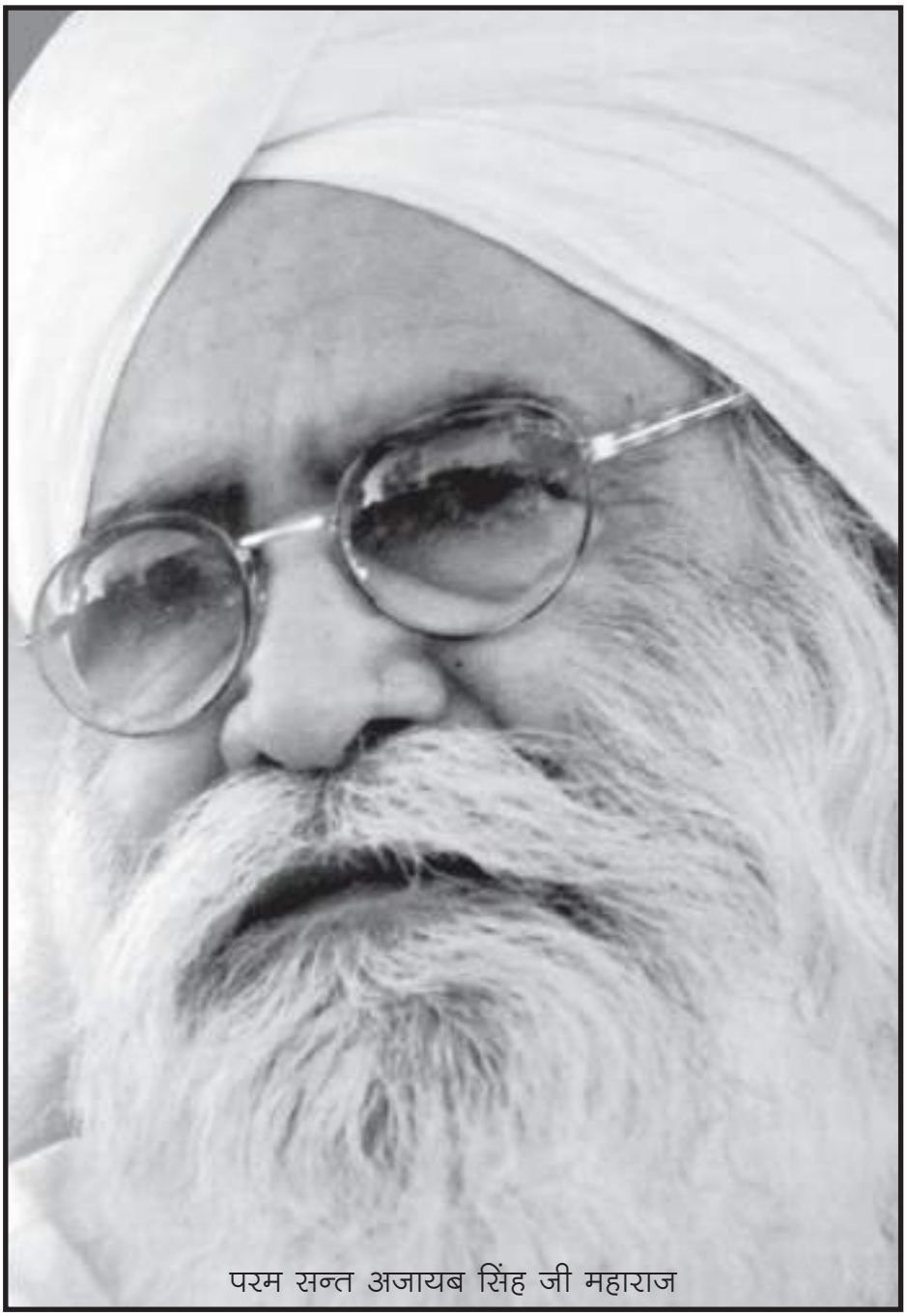

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

कि मुझे फिर ऐसा मौका मिलेगा या नहीं। महाराज कृपाल ने मेरे भजनों की तरफ बहुत ध्यान दिया। उसी दिन मैंने यह भजन भी गाया:

बंदा बण के आया, रब बंदा बण के आया।
आ के जग जगाया, रब बंदा बण के आया।।

जिस तरह कबीर साहब ने अपने शिष्य धर्मदास को अपना दर्शन दिया था उसी तरह मेरे गुरु ने मुझे अपना दर्शन दिया।

जब महाराज कृपाल मुझसे मिले तो उन्होंने मुझे साफ तौर पर दिखाया कि वह मेरी तलाश कर रहे थे कि मैं उनसे मिलूँ और नामदान लूँ। उन्हें मेरे गाए भजन पसंद आए। उस समय और भी बहुत से सतसंगी बैठे थे। मैंने आपसे कहा, ''आज मेरे जीवन का सबसे शुभ दिन है, आप मुझे और सारे प्रेमियों को अपना खुला दर्शन दे दें ताकि पता चल सके कि परमात्मा एक है। परमात्मा किसी मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे या चर्च में नहीं रहता, परमात्मा भक्तों के दिल में बसता है।''

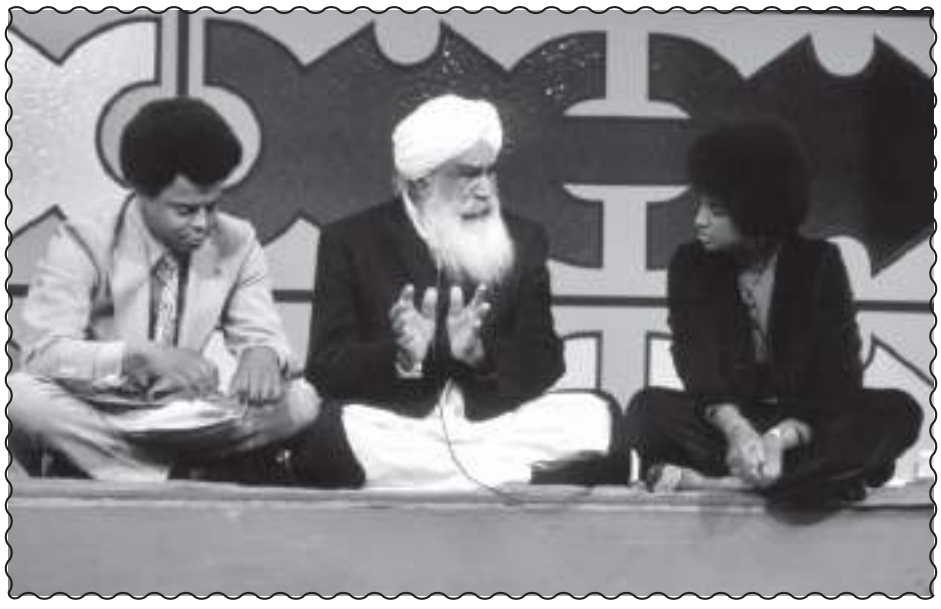

अगर आप दर्द के बारे में जानना चाहते हैं तो दु:खी से पूछें अगर आप डॉक्टर के बारे में जानना चाहते हैं तो मरीज से पूछें अगर आप रोटी की कीमत जानना चाहते हैं तो भूखे से पूछें। इसी तरह अगर आप गुरु का मूल्य जानना चाहते हैं तो उससे पूछें जो गुरु के मूल्य को जानता है वह आपको बताएगा कि गुरु क्या है और उसमें क्या गुण हैं?

हम जब भी गुरु के लिए भजन गा रहे होते हैं तो उस समय हमारे अंदर सिर्फ प्यार और नम्रता होनी चाहिए ताकि भजन की हर लाईन हमारी प्रार्थना के समान हो जाए। मैं कई बार यह भजन गाया करता हूँ:

चड़े चेत हर चेत प्राणी, बिन सिमरन पछतावेंगा।
लख करोड़ बरस जे जीवें, ओड़क नूं मर जावेंगा।
छुटेंगा जम जाली तो, जद भजन गुरां दे गावेंगा।
नाम भुलावें बहौ दु:ख पावें, पुट्ठी खल्ल लुहावेंगा।
आजज होके सतगुरु अग्गे, औगुण कद बक्शावेंगा।
ऐह मन पापी औगुणहारे को, तूं मोड़ कदों घर ल्यांवेंगा।
'अजायब' कृपाल दा नाम ध्या लै, नहीं तां पछोतावेंगा।।

अब नया साल आ गया है। आप सिमरन के बिना अंत में पछताएंगे। भले ही आप अरबों वर्षों तक जीवित रहें, अंत में आपको मरना है। अगर आपने परमात्मा की भक्ति नहीं की तो आप पछताएंगे। अगर आप गुरु के भजन गाएंगे तो आप यम के फंदे से मुक्त हो सकते हैं।

अगर आप नाम भूल जाएंगे तो आपको बहुत दु:ख मिलेगा, आपको परेशान किया जाएगा और आपको कई समस्याएं होंगी। सच्चाई को समझने के बाद आप अपने पापी मन को कब वापिस लाएंगे? क्या आप अपने गुरु से माफी के लिए प्रार्थना करेंगे?

अजायब कहता है कि आप कृपाल के नाम का ध्यान करें नहीं तो अंत में पछताना पड़ेगा। इसीलिए जब हम गुरु के लिए भजन गा रहे होते हैं तो हमारे अंदर प्यार ही प्यार होना चाहिए। ***

धन्य अजायब

कुदरत करके वसया सोये
वक्त विचारे सो बन्दा होये

समय के अनुसार कुछ चीजें बदलनी पड़ती है इसी तरह अजायब बानी मासिक पत्रिका दिसम्बर 2020 के बाद प्रेस प्रिंटिंग नहीं हो पाएगी अत: अब आपको यह पत्रिका अपने फोन के whatsapp पर प्राप्त करनी होगी। आप कृपया हमें अपने whatsapp no. की जानकारी 99 50 55 66 71 पर दें ताकि आपको Ajaibbani Hindi Magazine के ग्रुप में शामिल कर लिया जाए।

यह मासिक पत्रिका अजायब बानी व सन्त बानी आश्रम 16 पी. एस. रायसिंह नगर– 335039 जिला – श्रीगंगानगर (राजस्थान) द्वारा प्रकाशित अन्य पुस्तकें भी आप www.ajaibbani.org पर प्राप्त कर सकते हैं। अन्य जानकारी के लिए कृपया 80 79 08 46 01 व 96 67 23 33 04 पर संपर्क करें।